antim yatra:arunjaity.qxd 9/26/2010 7:38 PM Page 44

महापुरुष वास्तव में किसी काल, स्थान व परिस्थिति के खूंटे से बंधे नहीं होते। वे तो काल, स्थान व परिस्थितियों को अपनी महानता से महान बना देते हैं। इसका साक्षात गवाह है चित्रकूट। चित्रकूट, यानी भारत का वह पुण्य स्थान जो ऐसे महापुरूषों को ही नहीं, भगवान तक को बरबस अपनी ओर खींच सका है, उनकी सत्यता व वचन को परख सका है और उनकी दिव्यता को सिद्ध कर सका है। इस पुण्य धरती को भगवान राम और गोस्वामी तुलसीदास जी हमेशा के लिए पवित्र कर चुके हैं। इसे दुर्लभ व दिव्य योग ही कहा जाएगा कि नानाजी ने भगवान से मिलने की प्रतीक्षा के लिए यही पावन स्थान चुना जिसे जनमानस साधारण अर्थ में संयोग कहता है।

ऐसे दुर्लभ योग जीने वाले महापुरुष कहीं नहीं जाते, क्योंकि उनके माध्यम से ईश्वर अपना प्रताप दिखाता है, कभी कर्म से, कभी त्याग-तपस्या का प्रकाश बिखेरता है। नानाजी इन सब गुणों से ओत-प्रोत थे। इसलिए सच यह है कि नानाजी कहीं नहीं गए है। वह कहीं नहीं जा सकते। कर्म नानाजी का साक्षात ईश्वर था, वह साक्षात् दीनदयाल थे। जब ईश्वर ने महसूस किया कि अब नानाजी की कर्म-तपस्या पूरी हो गई है, तब इस चक्र पर उन्होंने नानाजी को विश्राम देने का निश्चय किया। सिर्फ उनका शरीर भर रवाना हुआ है। यह भाव कोई और नहीं, बल्कि नानाजी खुद रवाना होने से पहले सबमें जगा गए, जो उनकी अंतिम यात्रा पुण्य यात्रा की श्रृंखला में बराबर देखा जा सकता है।

नानाजी के शरीर छोड़ने के साथ उनके समूचे चित्रकूट परिवार में सन्नाटा पसर गया। चित्रकूट के घाटों की जीवंतता कुछ पल के लिए थम गई। लेकिन कुछ पल के ठहराव की इस प्रक्रिया में कोई सन्नाटा या कोई भय नहीं, बल्कि एक आत्मिक शांति थी जिसकी अनुभूति जड़ व चेतन सबमें व्याप्त थी जिसे नानाजी के सान्निध्य में रह कर प्राप्त किया गया था। आंखे नम थीं। ऐसा होता भी क्यों नही, आखिर हमेशा नर में नारायण का दर्शन करने वाले नानाजी ने अपने कर्मों से चित्रकूट की पावन धरती को ही नम नहीं किया था, बल्कि जीवनपर्यंत हर उस शख्स को अपने चुंबकीय व्यक्तित्व से प्रभावित किया था जिसे उनसे मिलने का योग मिला था।

उनकी विश्राम वेला में उन सभी व्यक्तियों की आंखों में नमी होना स्वाभाविक था। वरसों तक उनके सहयोगी रहे पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी ने अपने शोक संदेश में इसका जिक्र करते हुए कहा

चित्रकूट में नानाजी का अंतिम संस्कार करते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव डा. भरत पाठक

चित्रकूट में नानाजी के पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान